IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गोपाल दास तबला म्यूज़िकल सेंटर

गौरव शर्मा

संगीत संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय

कलकत्ता के रहने वाले गोपाल दास का जन्म 19वीं शताब्दी में सिराज़पुर में हुआ। इनके पिता का नाम गोविन्द दास था तथा परिवार में तबला बनाने की परंपरा गोविन्द दास के पिता कान्तो दास द्वारा शुरू की गई। गोविन्द दास गाँव में खेती–बाड़ी करते थे तथा साथ ही साथ तबला बनाते और ढोलक बजाया करते थे। गोविन्द दास के दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि कई बार इनके पास खाने के लिए भी कुछ नहीं होता था।

चमड़े का काम करने के कारण गाँव के लोग गोविन्द दास को अच्छा नहीं मानते थे, जिस कारण गाँव के लोगों ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया था। उस समय वाद्य निर्माण के लिए खाल को स्वयं ही साफ करना पड़ता तथा तबला बनाने के लिए कई दिनों तक खाल को तान कर रखना पड़ता था।

आर्थिक रूप से घर की स्थिति खराब होने के कारण गोपाल दास ने 10 वर्ष की आयु से ही अपने पिता के साथ काम करना शुरू कर दिया। गाँव के लोगों को उनके इस काम से इतनी आपत्ति थी की उनको इस काम के लिए गाँव से बाहर किराए पर दुकान लेनी पड़ी। वहीं से वे तबले, ढोलक बनाने व बेचने का काम किया करते थे। किन्तु इतने परिश्रमों के बाद भी घर की आर्थिक व्यवस्था इतनी खराब बनी हुई थी कि परिवार का गुजारा भी नहीं चल रहा था। वे एक महीने में 4 से 5 तबले ही तैयार कर पाते थे। क्योंकि उस समय वाद्य निर्माताओं को तबले का ढांचा स्वयं की तैयार करना पड़ता था। जिस कारण निर्माताओं को वाद्य बनाने में खूब समय व मेहनत करनी पड़ती थी। किन्तु मेहनताना उतना अच्छा नहीं मिलता था।

गोपाल दास सन् 1993 में कलकत्ता से दिल्ली तबले बेचने आया करते थे। दिल्ली में उस समय कई बड़े कलाकार कलकत्ता का तबला बजाना पसंद करते थे। उस समय वे रिक्खी राम एण्ड संस तथा बीना वालों के लिए तबला बनाकर बेचने के लिए जाया करते थे। दिल्ली में एक–दो दुकानों पर ही गोपाल दास के सारे तबले इत्यादि बिक जाया करते थे। इसका मोल भी उन्हें यहाँ पर अच्छा मिल जाया करता था उनके निर्माण कार्य, तबलों की टोनल क्वालिटी को देखकर दुकानदारों से भी उन्हें खूब प्रशंसा मिल रही थी।

एक बार कलकत्ता से तबले दिल्ली लेकर आते समय एक सज्जन ने उनसे कि इतना सारा सामान कहाँ लिये जा रहे हो? जवाब में उन्होंने बताया कि ये पूछा सब तबले हैं और कलकत्ता से इन्हें दिल्ली बेचने ले जा रहा हूँ। इस विषय पर काफी देर तक वार्तालाप करने के पश्चात् उन सज्जन ने गोपाल दास को सुझाव दिया कि आपको कलकत्ता से बार–बार दिल्ली आना मुश्किल नहीं लगता। क्यों ना आप दिल्ली में ही रहकर वाद्य निर्माण का कार्य करें। गोपाल दास को उस व्यक्ति की बात अच्छी नहीं लगी। परन्तु जब वह वापस अपने गाँव गए और लोगों को रोज किसी ना किसी बात पर उनसे झगड़ता देखा तो उन्होंने सन् 1995 में दिल्ली में रहने का निर्णय लिया।

गोपाल दास दिल्ली तो आ गए परन्तु यहाँ उन्हें रहने, खाने तथा भाषा की समस्या से झूंकना पड़ा। उस समय दिल्ली विश्वविद्यालय के पास मल्का गंज में उनके एक मित्र रहते थे। गोपाल दास अपने इस मित्र के पास कुछ समय के लिए रहे। अपने इस मित्र से उन्हें कई बार आर्थिक सहयोग भी मिला। कुछ समय तक गोपाल दास ने तबला निर्माण का कार्य यहाँ रहकर किया। तबलों को बनाने के बाद उन्हें बेचना एक कठिन कार्य था क्योंकि वे उस समय संसाधन विहीन थे अतः तबलों को अपने कंधों पर रख वे गली–गली तबले बेचा करते थे। इन तबलों को बेचकर जितना भी पैसा वह कमाते उसमें वह तबला बनाने का आवश्यक सामान व घर का राशन ले आते। गोपाल दास का यह मित्र आजकल चीन में रह रहे हैं।

कुछ समय पश्चात् गोपाल दास ने गोल मार्किट (दिल्ली) के पास किराये पर ही एक कमरा लिया। वहीं से वे एक बार फिर तबले बनाने का काम धीरे–धीरे करने लगे। इसी जगह से वह दिल्ली के दुकानदारों को तबला बनाकर दिया करते थे। जब तबला निर्माण का काम थोड़ा अच्छा हुआ तो गोपाल दास ने खुद की दुकान के बारे में विचार किया। किन्तु अब भी आर्थिक हालात बहुत अच्छे नहीं थे। इसी दौरान उन्हें कहीं से पता लगा की शक्कर पुर में सस्ते दाम पर दुकान के लिए जगह मिल सकती है और क्योंकि इस इलाके में कई अच्छे संगीतकार भी रहते हैं तो तबले का काम भी अच्छा चलने की काफी सम्भावना है। अतः कुछ समय पश्चात् गोपाल दास ने शक्कर पुर में खुद की तबले की दुकान खोली और आज भी यहीं से वे तबले का काम कर रहे हैं।

जिन दिनों गोपाल दास कलकत्ता से दिल्ली आए थे उस समय उन्हें कई बड़े–बड़े कलाकारों से प्रशंसा और सहायता भी प्राप्त हुई जिनमें पं. देबू चौधरी प्रमुख है। पं. जी ने गोपाल दास द्वारा निर्मित तबलों का काफी प्रचार किया। उन्होंने लगभग सभी संगीतज्ञ कलाकारों को गोपाल दास द्वारा निर्मित तबलों के बारे में बताया। शफाद जी ने भी गोपाल दास के तबलों की काफी प्रशंसा की। कई बड़े कलाकार गोपाल दास के काम को पसन्द करने लगे और आज भी करते हैं।

इनकी तबला निर्माण की कला को देखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत एवं ललित कला संकाय के लिए भी इन्हें कई बार काम करने का मौका मिला। साथ ही गोपाल दास ने कत्थक कला केन्द्र, गांधर्व महाविद्यालय जैसे प्रमुख सांगीतिक संस्थानों के लिए भी तबला निर्माण का कार्य किया।

वाद्य निर्माण के संदर्भ में गोपाल दास जी का कहना है कि जब तक अपने वाद्य से लगाव तथा प्यार नहीं होता तब तक वाद्य भी आपको प्यार नहीं देता। मन भी तभी खुशी से वाद्य बनाता है जब लोग काम को पसन्द करके प्यार देते हैं। अर्थात् संगीत के लिए स्नेह का होना बहुत जरूरी है।

गोपाल दास के जीवन में तबला निर्माण कला का विशेष महत्व है, जिसके चलते कई उतार–चढ़ावों के बावजूद भी उन्होंने तबला निर्माण की इस विशेष कला को व्यर्थ नहीं जाने दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. संगीत में ताल वाद्यों की उपयोगिता, डॉ. चित्रा गुप्ता, राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1992
2. अवनद्ध वाद्य–सिद्धांत एवं वादन परंपरा, डॉ. महेन्द्र प्रसाद शर्मा 'बमबम' अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण–2008
3. तबला एक समग्र वाद्य–स्वतंत्र वादन एवं संगति, डॉ. सीमा चौधरी, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2018
4. तबला विशारद, डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012